ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषिऔर प्रौद्योगिकीविश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक :25.01.2024

नैनीताल(उत्तराखंड)के मौसम का पूर्वानुमान–जारी करने का दिन:2024-01-25 (अगले5 दिनों के8:30 IST तक वैध)

मौसमकारक	26/01/2024	27/01/2024	28/01/2024	29/01/2024	30/01/2024
वर्षा (मीमी)	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	17.0	18.0	18.0	18.0	18.0
न्यूनतम तापमान(से.)	6.0	6.0	7.0	7.0	7.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	65	65	65	65	65
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	25	25	25	25	25
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	0	0	0	0	0
पवन दिशा (डिग्री)	140	140	140	140	140
क्लाउड कवर (ओक्टा)	1	0	0	1	0

समसारांश/ चेतावनी:

आने वाले दिनों में बारिश की सम्भावना नहीं है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमश: 17.0-18.0 डिग्री सेल्सियस और 6.0- 7.0 डिग्री सेल्सियस हो सकता है। मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्व दिशा से 0 किमी/घंटा की गति से हवा चलने की संभावना है। इस क्षेत्र में शुष्क मौसम बने रहने की संभावना है। 25 और 26 जनवरी, 2024 को नैनीताल की पहाड़ियों में अलग-अलग जगहों पर जमीनी पाले का येलो अलर्ट दिया गया है।

सामान्य सलाहकार:

मौसम पूर्वानुमान और कृषि मौसम संबंधी सलाह के बारे में एक नियमित अपडेट “मेघदूत ऐप” पर उपलब्ध है और बिजली की जानकारी प्राप्त करने के लिए “दामिनी ऐप” भी उपलब्ध है। मेघदूत और दामिनी ऐप को गूगल प्ले स्टोर (एंड्रॉइड यूज़र) और ऐप सेंटर (iOS यूज़र) से डाउनलोड किया जा सकता है। NDVI कंपोजिट क्षेत्र में अच्छी कृषि शक्ति को दर्शाता है। विस्तारित रेंज पूर्वानुमान प्रणाली 26 जनवरी से 1 फरवरी के दौरान वर्षा, अधिकतम और न्यूनतम तापमान की सामान्य प्रवृत्ति दर्शाती है।जमीनी पाला के लिए अलर्ट दिया गया है, इसलिए खेती की गतिविधियों को उसी के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए।

लघु संदेश सलाहकार:

25 और 26 जनवरी को होने वाली जमीनी पीला के लिए येलो अलर्ट दिया गया है, इसलिए उचित सुरक्षा और प्रबंधन कृषि उपाय किए जाने चाहिए।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	अवस्था	फ़सल विशिष्ट सलाह
मसूर	वानस्पतिक	फसल की निराई और गुड़ाई के लिए नियमित रूप से निगरानी की जानी चाहिए तथा आवश्यकता अनुसार सिंचाई की जानी चाहिए। पौधों के सड़ने की स्थिति में उचित फफूंदनाशी उपयोग किया जाना चाहिए।
तोरिया (लाही/घरिया) और पीली सरसों (राड़ा)	वानस्पतिक/ फूल आना	फसल की नियमित निगरानी की जानी चाहिए और समय-समय पर सिंचाई की जानी चाहिए। रोगों की निगरानी की जानी चाहिए और नियंत्रण के उपाय किए जाने चाहिए।
गेहूँ	वानस्पतिक	आवश्यकतानुसार सिंचाई की जानी चाहिए और सिंचाई के बाद यूरिया का प्रयोग किया जाना चाहिए।
जौ	वानस्पतिक	आवश्यकतानुसार सिंचाई की जानी चाहिए और सिंचाई के बाद यूरिया का प्रयोग किया जाना चाहिए।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	अवस्था	बागवानी विशिष्ट सलाह
शिमला मिर्च	नर्सरी	बीजों को तैयार नर्सरी में बोया जाना चाहिए और पौधों को उचित हवा और पानी की आवाजाही के साथ प्लास्टिक कवर का उपयोग करके ठंढ और पाले से बचाया जाना चाहिए।
सब्जीमटर	वानस्पतिक	फसल की निगरानी की जानी चाहिए और नियमित रूप से गुड़ाई और निराई की जानी चाहिए। समय-समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए। पौधे गलन की स्थिति में उचित फफूंदनाशी का प्रयोग करना चाहिए।
पालक	वानस्पतिक	ठंड से होने वाले नुकसान से बचने के लिए समय-समय पर सिंचाई की जानी चाहिए और उन्हें ठंड से बचाने के लिए उचित उपाय किए जाने चाहिए।
आलू	परिपक्वता	आलू में पछेती झुलसा रोग को नियंत्रित करने के लिए, मैनकोज़ेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर छिड़काव किया जाना चाहिए।
सेब		सेब तथा बीज वाले फलों में फल सड़न रोग के नियंत्रण के लिए तने के आसपास के क्षेत्र से मिट्टी हटा देनी चाहिए ताकि सूर्य की किरणें सीधे प्रभावित पेड़ के तने में प्रवेश कर सकें। प्रभावित छाल को हटा देना चाहिए तथा मिट्टी चढ़ाने के साथ चौबटिया का लेप लगाना चाहिए।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
गाय/ भैंस	पशुओं को ठंड से बचाने के लिए पशुओं के भोजन में तेल एवं गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। पशुओं को अजवायन और गुड़ भी खिलाएं। पशुओं को ठंड से बचाने के लिए शेड में उचित व्यवस्था

	करनी चाहिए। पशुओं को रिंडरपेस्ट रोग (शीतला रोग) से बचाने के लिए टीकाकरण कराना चाहिए। अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता के लिए पशु आहार में 10% की वृद्धि की जानी चाहिए।
मुर्गी	पशुचिकित्सक के अनुसार मुर्गियों को एफ़लाटोक्सिसओसिस के लिए दवाई प्रशासित किया जाना चाहिए जो उनके चारे में फंगस के पनपने के कारण हो सकता है ।

अन्य (मृदा/भूमि तैयारी) विशिष्ट सलाह:

अन्य (मृदा/भूमि तैयारी)	अन्य (मृदा/भूमि तैयारी) विशिष्ट सलाह
सामान्य सलाह	ज़मीनी पाले की चेतावनी अनुसार पौधा/अंकुर और फसलों में ठंड से बचाव के लिए उचित उपाय किए जाने चाहिए।